Open Access
उदयगिरी - बहुभाषिक इतिहास संशोधन पत्रिका
(A Bimonthly, Refereed, & Peer Reviewed Journal of History)
Published by: AAASSHER, Mumbai, (MS) India
Journal homepage: https://udayagiri.aaassher.org/
ISSN (Online): 2583-8423
Volume 1, Issue 5, December 2023; Pages 01 – 05
DOI: 10.5281/zenodo.10071198

Original Research Article

महात्मा गांधीजी की विश्वस्त संकल्पना

प्रा. डॉ. गौरव गोविंदराव जेवळीकर

विभागप्रमुख, लोकप्रशासन विभाग, महाराष्ट्र उदयगिरी महाविद्यालय, उदगीर जिला: लातूर ४१३५१७ महाराष्ट्र, भारत

Corresponding author E-mail: gaurav.jewalikar@gmail.com

Received: 07 October, 2023 | Accepted: 26 October, 2023 | Published: 27 October, 2023

बीजशब्द: महात्मा गांधी, विश्वस्त संकल्पना

भारतीय ज्ञान परंपरा मे महात्मा गांधीजी का योगदान महत्वपूर्ण है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद कुछ राजकीय दृष्टि से गांधीजी के बारे मे उच-निच विचार सामने आते है। लेकिन उन्होने देश के लिए जो त्याग किया है, जो समस्त मानव जाती के हितकारी विचार हमारे सामने रखे है उसे नाकारा नही जा सकता। देश को अंग्रेजो से स्वतंत्र करना यह साध्य था, उसके साथ ही गांधीजीने मानव कल्याणपर भी ध्यान दिया है। महात्मा गांधी जी का मानना था, "जो बदलाव तुम दुनिया में देखना चाहते हो,वह खुद में लेकर आओ"। यह विचार हर व्यक्ती को अंतर्मुख करनेवाला है। महात्मा गांधी जी के इन्ही विचारो के कारण

महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने गांधी जी के बारे में कहा था, “भविष्य की पीढ़ियों को इस बात पर विश्वास करने में मुश्किल होगी कि हाड़-मांस से बना ऐसा कोई व्यक्ति भी कभी धरती पर आया था।”

महात्मा गांधी - परिचय

गांधी जी का जन्म पोरबंदर की रियासत में २ अक्तूबर, १८६९ में हुआ था। उनके पिता करमचंद गांधी, पोरबंदर रियासत के दीवान थे और उनकी माँ का नाम पुतलीबाई था। गांधी जी अपने माता-पिता की चौथी संतान थे। मात्र १३ वर्ष की उम्र में गांधी जी का विवाह कस्तूरबा कपाड़िया से कर दिया गया। गांधी जी ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा राजकोट से प्राप्त की और बाद में वे वकालत की पढ़ाई करने के लिये लंदन चले गए। उल्लेखनीय है कि लंदन में ही उनके एक दोस्त ने उन्हें भगवद् गीता से परिचित कराया और इसका प्रभाव गांधी जी की अन्य गतिविधियों पर स्पष्ट रूप से देखने को

मिलता है। वकालत की पढ़ाई के बाद जब गांधी भारत वापस लौटे तो उन्हें वकील के रूप में नौकरी प्राप्त करने में काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। वर्ष १८९३ में दादा अब्दुल्ला (एक व्यापारी जिनका दक्षिण अफ्रीका में शिपिंग का व्यापार था) ने गांधी जी को दक्षिण अफ्रीका में मुकदमा लड़ने के लिये आमंत्रित किया, जिसे गांधी जी ने स्वीकार कर लिया और गांधी जी दक्षिण अफ्रीका के लिये रवाना हो गए। विदित है कि गांधी जी के इस निर्णय ने उनके राजनीतिक जीवन को काफी प्रभावित किया।

दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गांधी

दक्षिण अफ्रीका में गांधी ने अश्वेतों और भारतीयों के प्रति नस्लीय भेदभाव को महसूस किया। उन्हें कई अवसरों पर अपमान का सामना करना पड़ा जिसके कारण उन्होंने नस्लीय भेदभाव से लड़ने का निर्णय लिया। उस समय दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों और अश्वेतों को वोट देने तथा फुटपाथ पर चलने तक का अधिकार नहीं था, गांधी ने इसका कड़ा विरोध किया और अंततः वर्ष १८९४ में 'नटाल इंडियन कांग्रेस' नामक एक संगठन स्थापित करने में सफल रहे। दक्षिण अफ्रीका में २१ वर्षों तक रहने के बाद वे वर्ष १९१५ में वापस भारत लौट आए।

भारत में गांधी जी का आगमन

दक्षिण अफ्रीका में लंबे समय तक रहने और अंग्रेज़ों की नस्लवादी नीति के खिलाफ सक्रियता के कारण गांधी जी ने एक राष्ट्रवादी, सिद्धांतवादी और आयोजक के रूप में ख्याति अर्जित कर ली थी। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के वरिष्ठ नेता गोपाल कृष्ण गोखले ने गांधी जी को ब्रिटिश शासन के खिलाफ स्वतंत्रता हेतु भारत के संघर्ष में शामिल होने के लिये आमंत्रित किया। वर्ष १९१५ में गांधी भारत आए और उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम की रणनीति तैयार करने हेतु देश के गाँव-गाँव का दौरा किया।

गांधी और सत्याग्रह

गांधी जी ने अपनी संपूर्ण अहिंसक कार्य पद्धति को 'सत्याग्रह' का नाम दिया। उनके लिये सत्याग्रह का अर्थ सभी प्रकार के अन्याय, अत्याचार और शोषण के खिलाफ शुद्ध आत्मबल का प्रयोग करने से था। गांधी जी का कहना था कि सत्याग्रह को कोई भी अपना सकता है, उनके विचारों में सत्याग्रह उस बरगद के वृक्ष के समान था जिसकी असंख्य शाखाएँ होती हैं। चंपारण और बारदोली सत्याग्रह गांधी जी द्वारा केवल लोगों के लिये भौतिक लाभ प्राप्त करने हेतु नहीं किये गए थे, बल्कि तत्कालीन ब्रिटिश शासन के अन्यायपूर्ण रवैये का विरोध करने हेतु किये गए थे। सविनय अवज्ञा आंदोलन, दांडी सत्याग्रह और भारत छोड़ो आंदोलन ऐसे प्रमुख उदाहरण थे जिनमें गांधी जी ने आत्मबल को सत्याग्रह के हथियार के रूप में प्रयोग किया।

म. गांधीजी की विश्वस्त संकल्पना

महात्मा गांधीजी की विश्वस्त संकल्पना हमे ओनर (मालिक) नही तो हम केवल रक्षक है, विश्वस्त है इसकी अनुभूती करा देती है। गांधीजी की विश्वस्त संकल्पना समझने के लिए हमे दो जगह जाना जरुरी है। एक अस्पताल मे और दुसरा समशान मे। इन दोनो जगह पर जब हम जाते है तब हमे गांधीजी की विश्वस्त संकल्पना अधिक सटिक और स्पष्ट हो जाती है। कोई जीव जब पृथ्वी पर आता है तब वह खाली हात आता है। पैसा, हिरे, जवाहिरात, कोई पद, जमीन साथ मे नही लाता और जब कोई व्यक्ति समशान में जाता है तब जाते वक्त उसके पास कुछ नही होता है। खाली हात आना है, खाली हात जाना है। यही गांधीजी की विश्वस्त संकल्पना की आधारशीला है।

गांधीजी एक संत प्रवृत्ती के इंसान थे। इसी कारण किसी भी भौतिक वस्तू का मोह उन्होने नही किया और समस्त मानव जाती को विश्वस्त होने का आग्रह किया।

महात्मा गांधीजी का यह विचार था की "सब भूमी गोपाल की" इसका एक ही मतलब है हम सब विश्वस्त है, मालिक नही। यह बात अगर हम समझ लेते है तो हमारे जीवन में सुख-शांती आ सकती है। महात्मा गांधीजी समूह खेती पर बल देते है। जब तक किसानों के रहने के लिए घर-मकान न बांधे जाएं! तब तक भारत को कृषिप्रधान राष्ट्र कह नही सकते। भारतीय ज्ञान परंपरा के इस अमूल्य विचारो के अज्ञान के कारण आज हम असंतुष्ट है। सबकुछ हमारे पास होने के बाद भी मनमे कुछ लालसा है क्यूकी हम विश्वस्त है यह हम मान नही रहे है। जो मेरा है वो मेरा है और जो तेरा है वो भी मेरा है। यह विचारधारा बढ रही है इसके कारण समाज मे कलह बढ रहा है।

महात्मा गांधीजी कहते है, "यह पृथ्वी इंसान की हर जरूरतो को पूरा कर सकती है, लेकिन उसके लालच को नही"। लालच उत्पन्न होता है जब हम खुद को विश्वस्त ना समजते हुए मालिक समझने लगते है। सत्ता, संपत्ती, सौंदर्य यह कुछ दिनो के मेहमान होते है बादमे वह चले जाते। इतना ही नही, जिस शरीर पर हम बहुत नाज करते है वह भी कुछ दिनो का ही मेहमान है। हम उसके भी मालिक नही है।

महात्मा गांधी के ट्रस्टीशिप सिद्धान्त के अनुसार जो व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं से अधिक संपत्ति एकत्रित करता है, उसे केवल अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु संपत्ति के उपयोग करने का अधिकार है, शेष संपत्ति का प्रबंध उसे एक ट्रस्टी की हैसियत से देखभाल कर समाज कल्याण पर खर्च करना चाहिए। महात्मा गांधी मानते थे कि सभी लोगों की क्षमता एक सी नहीं होती है, कुछ लोगों की कमाने की क्षमता अधिक होती है तो कुछ लोगों की कम होती है, इसलिए जिनके कमाने की क्षमता अधिक है उन्हें कमाना तो अधिक चाहिए किंतु अपनी जरूरतों को पूरी करने के बाद शेष राशि समाज के कल्याण पर खर्च करना चाहिए। महात्मा गांधी के अुसार पूंजीपति और अधिक व्यवसायिक आमदनी वाले व्यक्तियों को अपनी जरूरतों को सीमित करना चाहिए तभी बची हुई आमदनी जरूरतमंदों पर खर्च की जा सकेगी।

महात्मा गांधी के न्यासिता सिद्धान्त को बुद्धिजीवियों के एक बड़े वर्ग ने काल्पनिक आदर्शवाद निरूपित करके अव्यवहारिक करार दिया। अनेक लोग उनके ट्रस्टीशिप सिद्धान्त की खिल्ली उड़ाते थे। किंतु गांधीजी को अपने ट्रस्टीशिप

सिद्धांत पर विश्वास था। इसलिए उन्होंने पूंजीपतियों और धनी व्यक्तियों से ट्रस्टीशिप सिद्धान्त समझाने के लिए बैठकें प्रारंभ की तथा उन्हें समझा-बुझाकर इसके परिपालन के लिए सहमत करवाने में बड़ी हद तक सफलता पाई। महात्मा गांधी के ट्रस्टीशिप सिद्धान्त से सहमत सैकड़ों उद्योगपतियों ने चैरिटेबल ट्रस्ट व फाउंडेशन स्थापित करके दर्जनों शिक्षण संस्थान, चिकित्सालय, तालाब का निर्माण करवाया। ट्रस्टीशिप सिद्धान्त का पालन करने वाले सैकड़ों उद्योगपतियों में परिवार सहित सादगीपूर्ण रहन-सहन अपनाने वाले जमनालाल बजाज को महात्मा गांधी का सबसे प्रिय उद्योगपति शिष्य माना जाता है। दूसरी ओर जमशेदजी टाटा ने १९०३ से पहले ही ट्रस्टीशिप को व्यवहार में प्रयोग करना प्रारंभ कर दिया था।

गांधी के विचारों ने दुनियाभर के लोगों को न सिर्फ प्रेरित किया बल्कि करुणा, सहिष्णुता और शांति के दृष्टिकोण से भारत और दुनिया को बदलने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने अपने समस्त जीवन में सिद्धांतों और प्रथाओं को विकसित करने पर ज़ोर दिया और साथ ही दुनिया भर में हाशिये के समूहों और उत्पीड़ित समुदायों की आवाज़ उठाने में भी अतुलनीय योगदान दिया। साथ ही महात्मा गांधी ने विश्व के बड़े नैतिक और राजनीतिक नेताओं जैसे- मार्टिन लूथर किंग जूनियर, नेल्सन मंडेला और दलाई लामा आदि को प्रेरित किया तथा लैटिन अमेरिका, एशिया, मध्य पूर्व तथा यूरोप में सामाजिक एवं राजनीतिक आंदोलनों को प्रभावित किया।

निष्कर्ष

यदि २१वीं सदी को परिभाषित करने में वैश्वीकरण, मुक्त बाजारों, निजीकरण और उदारीकरण जैसे शब्दों का प्रयोग किया जाना आवश्यक है तो यह भी अनिवार्य है कि हिंसा, उग्रवाद, असमानता, गरीबी और विषमता जैसे शब्दों को अनदेखा न किया जाए। हिंसा, उग्रवाद, असमानता, गरीबी और विषमता आदि की उपस्थिति में भी यदि कोई गांधी और उनके विचारों की प्रासंगिकता का प्रश्न करता है तो शायद गांधी के विचारों को लेकर उस व्यक्ति की समझ में कोई अस्पष्टता है। लोकतंत्र में आलोचना करना सभी का अधिकार होता है, परंतु आलोचना करने से पूर्व यह भी आवश्यक है कि हम उस व्यक्ति के बारे में अच्छे से पढ़ें और तर्क के आधार पर उसकी आलोचना करें। महात्मा गांधीजी की विश्वस्त संकल्पना को २१ शताब्दी मे एक नैतिक विकल्प रूप मे देखा जा सकता है। उन्होने जन-जन मे ये बात बडी अच्छी तरह से पोहोचाई है की हम केवल इस धरती पर कुछ दिनो के मेहमान है। इसलिये हमे मालिक नही, तो केवल विश्वस्त बनके ही अपना जीवन व्यतीत करना है। विश्वस्त संकल्पना हमे मोह से दूर ले जाती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

१. क्रान्त (२००६) स्वाधीनता संग्राम के क्रान्तिकारी साहित्य का इतिहास १ (१ सं) नई दिल्लीः प्रवीण प्रकाशन पः १०७

२. क्रान्त, मदनलाल वर्मा (२००६) स्वाधीनता संग्राम के क्रान्तिकारी साहित्य का इतिहास २ (१ सं) नई दिल्लीः प्रवीण प्रकाशन पः ५१२

३. भारतन कुमारप्पा, संपादक फॉर पसिफिस्ट्स एमयकेय द्वारा लिखित। गांधी, नवजीवन प्रकाशन हाउस, अहमदाबाद, भारत, १९४९ आर गांधी, पटेल : एक जीवन, pp. २३०-३२

४. आर. गांधी, पटेल : एक जीवन, pp. २८३-८६

५. महात्मा गांधी की संग्रहित रचनाएं वॉल्यूम ५ पेज ४१०

६. जैक होमर, गाँधी के पाठक, pp. ३२४-६